लेखा-योग

नामे और जमा ७७वाँ अंक – मार्च '०२; (अगस्त '०२ में प्रकाशित)

इस अंक में

नामे और जमा : बायें या दायें? ______ १
डैट ______ १
लैफ्ट ______ १
मगर इस सब का सार क्या है? ______ २
लेखांकन प्रणाली के तीन नियम ______ २
एक आसान विकल्प ______ ३
क. अच्छा बुरा नियम ______ ३
ख. मानवीकरण प्रक्रिया ______ ३
ग. सब के लिए केवल एक ही नियम ३
घ. वापस फिर से वहीं ______ ३
ङ. आईये एक बार जाँच करें... ____ ४

लगभग सारे लेखांकन का सार दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है : नामे (debit) और जमा (credit)। साधारण मानवों के लिये ये दोनों अत्यन्त उबाउ और नीरस शब्द हैं किन्तु लेखाकारों के तो मानो इनमें प्राण ही बसते हैं। आखिर इन शब्दों का अर्थ क्या है?

नामे और जमा : बायें या दायें?

संभवतः आपने लेखाकारों के बारे में यह चुटकुला पहले भी सुना हो :

> एक धनाढ्‌य एवं सफल बैंकर अपनी विश्लेषण प्रतिभा और पैनी दृष्टि के लिये प्रसिद्ध थे। जटिल से जटिल आर्थिक चिट्ठों (balance sheet) को भी एक बार देखते ही समझ जाते थे। उनका प्रशिक्षण भी एक लेखाकार के रूप में ही हुआ था। प्रतिदिन जब वह सुबह कार्यालय पहुंचते तो अपनी तिजोरी खोल कर एक कागज का पुर्जा निकालते थे। उसे ध्यान से पढ़ कर पुनः वापिस तिजोरी में रख देते थे।
>
> उनके स्वर्गवास के पश्चात् उनके सहायक के मन में उस पुर्जे को देखने की तीव्र जिज्ञासा हुई। उसने एक दिन मौका पाकर वह तिजोरी खोली और उस पुर्जे को निकाल कर उत्सुकतापूर्वक देखा। पुर्जे पर स्वर्गवासी बैंकर ने स्वयं सुन्दर अक्षरों में लिखा था : 'नामे बायीं ओर होता है। जमा दायीं ओर होता है।'

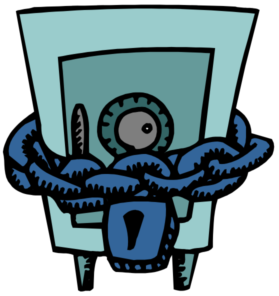

अब प्रश्न यह उठता है कि नामे बायीं ओर तथा जमा दायीं ओर ही क्यों होता है? इस प्रश्न के उत्तर के लिये हमें इतिहास के पन्ने पलटने होंगें और 'डेबिट' (debit) तथा 'क्रेडिट' (credit) की व्युत्पत्ति समझनी होगी[१]। वास्तव में डेबिट शब्द 'डैट' (debt) से जुड़ा है। आखिर यह डैट शब्द आया कहाँ से?

डैट

डैट की उत्पत्ति डेबिटा (debita) के रूप में हुई। डेबिटा का एकवचन डेबिटम (debitum, देयवस्तु) होता है। डेबिटम शब्द डेबेअर (debere–देनदारी) का ही एक रूप है। १५वीं शताब्दी से यह शब्द अंग्रेजी भाषा में डेबिट के रूप में प्रयुक्त हुआ। जिन व्यक्तियों को पैसा उधार दिया जाता था, उनको डैटर (देनदार) कहा गया।

उन दिनों यूरोप में देनदारों का बड़ा बुरा हाल था। जब वे पैसे नहीं देते तो उन्हें कारागार में भेज दिया जाता था। उनके लिये विशेष कारागार बनाये गये थे जो ठसाठस भरे रहते थे। जिन्होने शेक्सपीयर का 'वेनिस का सौदागर' पढ़ा है वे जानते हैं कि अन्तोनियो का क्या हश्र होता, यदि अन्तिम क्षण में पोर्शिया चतुराई से उसे न बचा लेती! साफ है कि उन दिनों देनदारी बड़ी ही कष्टदायक होती थी।

लैफ्ट

कुछ ऐसा ही हाल बाएँ हाथ से काम करने वालों का भी था। ऐसे व्यक्तियों को ईसाई चर्च चुड़ैल या मायावी मानता था। सन् १४८४ से १७८२ के बीच ऐसे हजारों लोगों को खंभों से बांध कर जीवित ही

---

[१] प्रस्तुत विश्लेषण अंग्रेज़ी शब्दों पर आधरित है। किंतु इसका यह अर्थ नही समझना चाहिए कि भारतीय बही-खाता पद्धति पश्चिमी पद्धति का ही रूपान्तर मात्र है।

जला डाला गया[२]। भारत में भी बायाँ हाथ हजारों वर्षों से अशुद्ध माना जाता रहा है, हालाँकि किन्हीं दूसरे ही युक्तिसंगत कारणों से।

पुरानी अंग्रेजी में 'लैफ्ट' शब्द की जगह 'विनैस्त्रा' (winestra) प्रयुक्त होता था। विनैस्त्रा[३] का एक अर्थ 'मित्रतापूण[४]' भी है। तो इसे 'बाएँ' (वाम) के लिये क्यों प्रयोग किया गया? शायद यह सोच कर कि ऐसा करने से अशुभ वाम ताकतें शांत हो जायेंगीं।

इन दोनो बातों को देखते हुए यह स्वभाविक ही था कि डेबिट को बाएँ हाथ पर रखा जाता। आर्थिक चिठ्ठे में भी इसी बात का ध्यान रखा गया। लेनदारी, संपत्ति, इत्यादि (शुभ) को दाईं ओर और देनदारी, अन्य दायित्व, इत्यादि (अशुभ) को बाईं ओर रखा गया।

इसी प्रकार क्रेडिट शब्द की उत्पत्ति लातीनी शब्द क्रेडेयर (credere) से हुई है। इस शब्द का अर्थ है – 'विश्वास करना'। इस शब्द के कुछ अनुकूल गुणार्थ है, जैसे – creditable (प्रशंसनीय), credible (विश्वसनीय)। इसी प्रकार से राईट (right) शब्द भी सकारात्मक है, जैसे–'doing the right thing'। इन्हीं कारणों से जमा प्रविष्टि (credit entry) को हमेशा दाईं ओर ही रखा जाता है।

मगर इस सब का सार क्या है?

विश्व में दो शक्तियाँ काम कर रही हैं, अच्छी और बुरी। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, चित्त और पट्ट। अंक भी दो प्रकार के होते हैं, धनात्मक (positive) एवं ऋणात्मक (negative)। हर व्यक्ति के दो हाथ होते हैं, दायाँ व बायाँ।

लेखाकारों ने यह सत्य बहुत पहले ही जान लिया और इस सिद्धान्त को लेखाविधि में अपनाया। लेखाकारों के अनुसार हर कारोबार के दो पक्ष होते हैं, एक लेना व दूसरा देना। अगर आप को कुछ धन मिलता है तो अवश्य ही कहीं न कहीं किसी ने यह धन दिया होगा।

यदि आप किसी से धन प्राप्त करते हैं तो आप उसके ऋणी (debtor) कहलाएंगे। इसलिए कुछ प्राप्त करने की विधि को नामे (debit) कहा गया है। इसी प्रकार, यदि आप किसी को कुछ देते हैं तो आप उसके लेनदार (creditor) कहलाएगें। इसलिए देने की विधि को जमा (credit) कहा जाता है।

नामे व जमा, व्यवहार विधि (लेन-देन) के दो अविभाज्य पहलू हैं जो हमेशा साथ-साथ रहते हैं। लेखाकारों का कहना है कि किसी भी लेन-देन में नामे (debit) व जमा (credit) बराबर होना चाहिए। जिस प्रकार हर क्रिया के विपरीत समान प्रतिक्रिया होती है, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक नामे के विपरीत समान जमा होना अनिवार्य है।

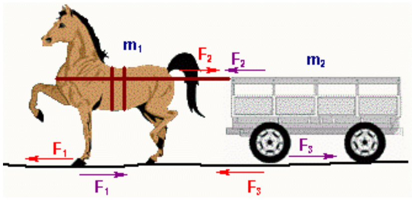

श्री आईसैक न्यूटन ने यह सत्य १६८७ में जाना[५] और इसे भौतिक शास्त्र में प्रयोग किया। तब जाकर गति के तीसरे नियम (हर क्रिया के विपरीत समान प्रतिक्रिया होती है।) का पता चला।

लेखांकन प्रणाली के तीन नियम

खाते तीन प्रकार के होते हैं– 'वास्तविक', 'व्यक्तिगत' एवं 'नामतः' (नाम मात्र का) । यदि आप यह पता लगा लें कि आप किस खाते में लेन-देन कर रहे हैं तो आप सही नियम का प्रयोग कर सकते हैं। यह बात और है कि सही खाते की पहचान करना इतना आसान नही। फिर भी आइये कोशिश करते हैं :

१ वास्तविक खाते (Real Accounts): वास्तविक खाते साकार व स्पर्शनीय होते हैं, जैसे – भवन, रोकड़, वाहन, इत्यादि। इन खातों का नियम है – 'आनेवाले को नामे व जानेवाले को जमा'।

२ व्यक्तिगत खाते (Personal Accounts): व्यक्तिगत खाते व्यक्तियों के खाते होते हैं। व्यक्तिगत खातों के दायरे में संस्थाएँ भी शामिल हैं। इन खातों का नियम है – 'प्राप्तकर्ता को नामे तथा देनेवाले को जमा'।

३ नामतः खाते (Nominal Accounts): नामतः खाते दोहरी लेखांकन प्रणाली का सबसे उत्कृष्ट नमूना है। नोमिनल (nominal) शब्द की उत्पत्ति लातीनी शब्द नोमैन (nomen) से हुई है। इसके नाम में ही इसका अर्थ छिपा है। नामतः खाते यानि केवल नाम के खाते, जिसमें कुछ ठोस नहीं। नामतः खाते लेखांकन प्रणाली की कल्पना शक्ति का एक अच्छा उदाहरण है। आप इन खातों को न स्पर्श कर सकते हैं, न देख सकते हैं और न ही सूंघ सकते हैं। आय के खाते (जैसे – विक्रय, शुल्क, अर्जित ब्याज, आदि) और व्यय के खाते (जैसे – यात्रा भाड़ा, छपाई, कार्यालय किराया, आदि)

---

[२] द वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया, १९९७ संस्करण, खण्ड २१, पृष्ठ २८२

[३] यह स्वीडिश शब्द vän (मित्र) से आया है।

[४] अभी भी यह अर्थ स्वीडिश शब्द vänster और डेनिश शब्द venstre (left) में पाये जाते हैं।

[५] संभवतः श्री आईसैक न्यूटन ने भी महाविद्यालय में लेखांकन की शिक्षा प्राप्त की हो!

सभी नामतः खाते हैं।

नामतः खातों का नियम भी काफी सरल है। सभी खर्चों व हानि को नामे करें तथा सभी आय व लाभ को जमा करें। ऐसा क्यों? क्योंकि खर्चा अच्छी चीज़ नहीं है इसलिए उसे बाईं तरफ (अशुभ) रखना चाहिए। इसी प्रकार दायाँ हाथ और आय शुभ हैं इसलिए उसे दाईं ओर रखना चाहिए।

एक आसान विकल्प

यदि उपरोक्त नियम आप को कठिन लगते हैं तो आप के लिए एक दूसरा विकल्प[६] कुछ इस प्रकार है।

क. अच्छा बुरा नियम

इस आसान तरीके में आपको केवल निम्नलिखित दो बातें याद रखनी हैं

१ किसी से लेना अच्छा नहीं है (क्योंकि अन्त में उसे लौटाना होता है), इसलिए लेनेवालों को बाईं ओर रखिए।

२ देना अच्छा होता है (सभी धर्म दान की शिक्षा देते हैं), इसलिए देनेवालों को दाईं ओर रखिए।

ख. मानवीकरण प्रक्रिया

यदि आप इस से सन्तुष्ट हैं तो हम आगे बढ़ते हैं:

- सबसे पहले हम इन खातो को व्यक्तित्व देते हैं। प्रत्येक खाते को जीवंत समझिए। रोकड़ को श्रीमान् रोकड़िया और बैंक को श्रीमती बैंकर।
- इसी प्रकार जब आप साकार व स्पर्शनीय वस्तुएँ देखते हैं तो उसे भी व्यक्तित्व देने की कोशिश कीजिए। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप ने एक मारूति जिप्सी खरीदी है। यहाँ सोचिए कि श्रीमती बैंकर ने मारूति उद्योग लिमिटेड को भुगतान किया है।
- यदि आप ने व्यय किया है तो उसे भी व्यक्तित्व देने की कोशिश कीजिए। जैसे आप की यात्रा के लिए रेलगाडी का किराया भारतीय रेल को दिया गया।
- यदि आप दान प्राप्त करते हैं तो दाता को भी व्यक्तित्व प्रदान कीजिए। जैसे श्रीमान् दाता ने आप को पैसे दिए।

ग. सब के लिए केवल एक ही नियम

अब इस अच्छा-बुरा नियम का प्रयोग करें।

लेन – देन	प्राप्त कर्त्ता	भुगतान कर्त्ता	कच्ची प्रविष्टि
बैंक से रोकड़ निकाला	श्रीमान् रोकड़िया	श्रीमती बैंकर	Dr. श्रीमान् रोकड़िया Cr. श्रीमती बैंकर
मारूति जिप्सी खरीदी	मारूति उद्योग	श्रीमती बैंकर	Dr. मारूति उद्योग Cr. श्रीमती बैंकर
रेल किराया दिया	भारतीय रेल	श्रीमान् रोकड़िया	Dr. भारतीय रेल Cr. श्रीमान् रोकड़िया
दान प्राप्त किया	श्रीमती बैंकर	श्रीमान् दाता	Dr. श्रीमती बैंकर Cr. श्रीमान् दाता

घ. वापस फिर से वहीं

अब इन सभी को अपने वास्तविक स्वरूप में वापस लाईए। दूसरे प्रयास में इन्हें नियमित खातों में बदल दीजिए।

अनुमानित प्रविष्टि	पहला प्रयास	दूसरा प्रयास
Dr. श्रीमान् रोकड़िया	Dr. ~~श्रीमान् रोकड़िया~~ रोकड़	Dr. रोकड़ खाता

[६] ज्यादातर यह देखा गया है कि इस तरीके को समझने में प्रशिक्षित लेखाकारों को काफी परेशानी होती है। लेखाकारो से निवेदन है कि कृप्या इस पर ध्यान न दें !

Cr. श्रीमती बैंकर	Cr. ~~श्रीमती बैंकर~~ बैंक	Cr. बैंक खाता
Dr. मारूति उद्योग Cr. श्रीमती बैंकर	Dr. ~~मारूति उद्योग~~ जिप्सी Cr. ~~श्रीमती बैंकर~~ बैंक	Dr. ~~जिप्सी~~ वाहन खाता Cr. बैंक खाता
Dr. भारतीय रेल Cr. श्रीमान् रोकड़िया	Dr. ~~भारतीय रेल~~ रेल टिकट Cr. ~~श्रीमान् रोकड़िया~~ रोकड	Dr. ~~रेल टिकट~~ यातायात खाता Cr. रोकड़ खाता
Dr. श्रीमती बैंकर Cr. श्रीमान् दाता	Dr. ~~श्रीमती बैंकर~~ बैंक Cr. ~~श्रीमान् दाता~~ दाता	Dr. बैंक खाता Cr. ~~दाता~~ दान खाता

ङ. आईये एक बार जाँच करें...

क्या उपरोक्त परिणाम लेखांकन के तीन नियमों से मेल खाते हैं?

निर्णायक प्रविष्टि (दूसरा प्रयास)	खाते का प्रारूप	लेन-देन का विश्लेषण	लागू होने वाले नियम
Dr. रोकड़ खाता Cr. बैंक खाता	वास्तविक व्यक्तिगत	रोकड आया बैंक ने पैसे दिए	आनेवाले को Dr. देनेवाले को Cr.
Dr. वाहन खाता Cr. बैंक खाता	वास्तविक व्यक्तिगत	वाहन आया बैंक ने पैसे दिए	आनेवाले को Dr. देनेवाले को Cr.
Dr. यातायात खाता Cr. रोकड़ खाता	नामतः वास्तविक	यातायात पर खर्च हुआ रोकड बाहर गया	खर्चो व हानि को Dr. जानेवाले को Cr.
Dr. बैंक खाता Cr. दान खाता	व्यक्तिगत नामतः	बैंक को पैसा मिला दान आया	आनेवाले को Dr. आय व लाभ को Cr.

आशा है कि यह दूसरा विकल्प, दोहरी लेखांकन प्रणाली को समझने में कुछ मद्द कर सकेगा।

लेखा·योग क्या है – 'मानक हिन्दी कोश' के अनुसार योग के कम से कम ४० अर्थ होते हैं। गणित में योग का अर्थ है 'दो संख्याओं को जोड़ना'। आध्यात्मिक रूप से योग का अर्थ तपस्या अथवा साधना होता है। श्रीमद्भगवद् गीता में निष्काम कर्म को ही योग बताया गया है। लेखा-कर्म में यह तीनों भाव अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यदि लेखाकार लेखा लिखने और योग लगाने में योगफल की चिन्ता न करें तो अवश्य ही संस्थाओं के हिसाब-किताब में सुधार होगा। लेखा·योग का यही उद्देश्य है।

लेखा·योग (AccountAble™) हर माह प्रकाशित होता है। इसमें जन-सेवी संस्थाओं के नियमन व लेखाविधि प्रणाली से सम्बन्धित, विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाती है। यह विभिन्न जन-सेवी संस्थाओं, दाता संस्थाओं व अङ्केक्षण प्रतिष्ठानों (ऑडिट फर्म्स) में लगभग १,२०० व्यक्तियों को वितरित किया जाता है। लेखा·योग के प्रत्युत्पादन या पुनर्वितरण को अकाउण्टएड इण्डिया प्रोत्साहित करता है, यदि ऐसा अव्यवसायिक उद्देश्य से किया जाए एवं इनके स्रोत को अभिस्वीकार किया जाए।

आंग्ल भाषा में लेखा·योग – This issue of *Lekha-Yog* is available in English as AccountAble.

विधि व्याख्या– यहाँ पर उल्लेखित विधि की व्याख्या साधारण जानकारी हेतु की गई है। अतः निवेदन है कि कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पूर्व अपने परामर्शदाता से सम्मति ले लें।

लेखा·योग का वाभ-स्वरूप – लेखा·योग के सभी पुराने अङ्कों का आंग्ल संस्करण (AccountAble) हमारे वाभ-स्थल www.AccountAid.net पर उपलब्ध हैं। इनका हिन्दी वाभ-स्वरूप कुछ समय पश्चात् प्राप्त हो सकेगा।

अकाउण्टएड कैपस्यूल्स – जन-सेवी संस्थाओं के नियमन व लेखाविधि प्रणाली से सम्बन्धित, विभिन्न विषयों पर छोटी-छोटी परन्तु महत्वपूर्ण जानकारी के लिए अकाउण्टऐड कैपस्यूल्स आंग्ल भाषा में उपलब्ध हैं। इस सुविधा के लिए कृपया accountaid-subscribe@topica.com पर ई-डाक भेजें।

अपने प्रश्न व सुझाव हमें इस पते पर भेजें: अकाउण्टएड इण्डिया ५५-bl, पॉकेट-सी, सिद्धार्थ विस्तार, नई दिल्ली – ११० ०१४ दूरभाष : ०११ – २६३४ ३१२८; दूरभाष/प्रतिरूप प्रेषिका : २६३४ ६०४१, ई-डाक : accountaid@vsnl.com; accountaid@gmail.com

© AccountAid™ India अगस्त, ई. सन् २००२; भाद्रपद विक्रम संवत् २०५९